[श्री विनायक प्रसाद यादव]

मांगो की ओर मुखातिब होने की बजाय पुलिस टेरर करवा रही है, जिस के चलते शिक्षक समुदायों मे जबर्दस्त विक्षोप पैदा हो रहा है और वे अपना आन्दोलन उग्र करने पर मजबूर किये जा रहे हैं। आज माननीय शिक्षा मंत्री का यह बयान कि शिक्षको की धमकी से वे डरने वाले नही हैं, देख कर आश्चर्य और दुख हुआ है। गरीब शिक्षक धमकी देने की स्थिति में नही है, न वे धमकी देना चाहते है। गरीबी की मार से तबाह हो कर अपनी जायज मांगें शांतिपूर्वक ढग से रख रहे है।

अत: मैं सरकार का ध्यान इस ओर दिलाते हुए, उन की मागो के सम्बन्ध में वक्तव्य की माग करता हू।

(iv) FUNCTION ORGANISED IN HONOUR OF THE SOVIET PRIME MINISTER UNDER AUSPICES OF INDO-SOVIET CULTURAL SOCIETY.

डा0 रामजी सिंह (भागलपुर) अध्यक्ष महोदय, मैं नियम 377 के अधीन अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय को सदन के सम्मुख प्रस्तुत करता हू।

यह दुख और दुर्भाग्य की बात है कि हमारे माननीय अतिथि सोवियत रूस के प्रधान मंत्री श्री कोसीगिन के शुभागमन पर भारत रूसी मैत्री संघ (इसकास) के तत्वाधान में आयोजित सभा को राजनीतिक रगमच बना दिया गया। 10 मार्च को आयोजित इस बैठक मे सोवियत रूस के प्रधान मंत्री के समक्ष श्री राजेश्वर राव और श्री शकर दयाल सिंह न कम्पूचिया को मान्यता नहीं देने के बारे मे भारत सरकार की तीव्र भर्त्सना की और विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की चीन यात्रा की भी प्रखर आलोचना की।

मैं यह नही कहता कि हमारी विदेश नीति की हमारे बन्धु आलोचना न करे लेकिन किसी विदेशी मेहमान के स्वागत में आयोजित सभा में उनके सामने यह इस प्रकार की बाते करना राष्ट्र के स्वाभिमान पर कलक तथा साथ ही साथ स्वय देश की एकता का भी हृदय विदारक चित्र उपस्थित करता है। कुछ ही दिनों पहले भारत मे सोवियत समर्थक 14 देशो के राजदूतों ने एक संयुक्त प्रेस कान्फ्रेस करके चीन अथवा वियतनाम के हमले की निन्दा की थी।

प्रत्येक देश किसी भी मामले पर अपनी नीति निर्धारित करने का पूर्ण अधिकारी है। लेकिन हमारी धरती पर इस प्रकार की संयुक्त बयानबाजी और राजनीतिक पेचकश भारत की सार्वभौमिकता का समादर नही है। अगर सरकार इन चीजों के सम्बन्ध में अभी से ध्यान नहीं देगी, तो बढ़ते-बढ़ते छोटा सा फोड़ा भारी भगन्दर का रूप धारण कर लेगा और भारतवर्ष में विदेशी राजनीति की दखलान्दाजी घर कर जाएगी।

इसलिए मैं सरकार से स्पष्ट आश्वासन चाहता हू कि भविष्य मे ऐसे किसी भी संस्था या सघ को विदेशी मेहमानो के स्वागत सत्कार के लिए अनुमति न दी जाये जो इसको गुटपरस्ती और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति जोड़ तोड़ का अखाड़ा बना देती है और विभिन्न देशो के राजदूत को भी यह स्पष्ट कह दिया जाये कि इस प्रकार की सयुक्त बयानबाजी और प्रेम कान्फ्रेस आदि भारत की भूमि पर न की जाए।

(v) THE JOINT STATEMENT ISSUED BY PRIME MINISTERS OF INDIA AND THE SOVIET UNION.

श्री राज नारायण (राय बरेली). श्रीमन्, हमारे कुछ आर०एस०एस० के मित्र हम को पीछे आने को कह रहे है।

अध्यक्ष महोदय : यह बात स्टेटमेट मे नही है।

श्री राज नारायण : श्रीमन्, मै आप के पुकारने पर तत्काल नही उठा, इसलिए स्पष्टीकरण कर रहा हूं।

श्रीमन्, लोक सभा के प्रक्रिया कार्य तथा सचालन विषयक नियमों के नियम 377 के अधीन मैं निम्न महत्वपूर्ण विषय उठा रहा हूं। आप जरा ध्यान से सुनियेगा क्योंकि अभी डा0 साहब जो बोले है, शायद हमारी ध्वनि उस से कुछ विपरीत जाए।

गत 15 मार्च, 79 को भारत-रूस के प्रधान मंत्रियों मे एक संयुक्त बयान द्वारा चीन को बिना किसी शर्त तत्काल वियतनाम से पूर्णरूपेण चीनी सेना को हटा लेने को कहा है। इस संयुक्त वक्तव्य में एग्रेशन (हमला) शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है। यह एक रहस्य है क्योंकि श्री कोसिजिन बराबर एग्रेशन शब्द का प्रयोग करते थे। इस से ऐसा लगता है (व्यवधान)। श्रीमती अब ये पूछते हैं कि एग्रेशन और आक्रमण में क्या फर्क है।

एक माननीय सदस्य : हमले और आक्रमण में ?

अध्यक्ष महोदय : आप स्टेटमेंट में से पढ़िये।

श्री राज नारायण : एग्रेशन का मतलब क्या है ? आप जज रह चुके हैं ? अगर कोई आक्रमण करता है तो प्रोवोकेशन से करता है अगर कोई एग्रेसन करता है तो बिना किसी प्रवोकेशन के करता है। एग्रेशन को हमने हमला कहा है और अटेक को हमने आक्रमण कहा है। वियतनाम ने चीन प्रवोक नहीं किया था।